चतुर्थ अध्याय
महाकाव्य

लौकिक संस्कृत में काव्य–लेखन का उदयकाल महर्षि वाल्मीकि से प्रारम्भ हुआ। शब्दों के द्वारा किसी विषय का रमणीय चित्रण करना काव्य है। संस्कृत महाकाव्य की कल्पना का मूल–आधार वाल्मीकि–रामायण है। रामायण और महाभारत जैसे आर्ष–काव्य इस साहित्य–विधा के प्रकाश–स्तम्भ हैं। इन्हीं से परवर्ती काव्यों को विषय–वस्तु, वर्णन–विधि और भाषा–शैली की दिशा मिली।

महाकाव्य का शास्त्रीय लक्षण प्राचीन ग्रन्थों में नहीं प्राप्त होता है। दण्डी द्वारा काव्यादर्श (1/14–19) में दिया गया महाकाव्य का लक्षण सर्वप्राचीन है। इसके अनुसार महाकाव्य की रचना सर्गों में होती है। इसमें एक ही नायक होता है। वीर, शृङ्गार या शान्त–इनमें से कोई एक मुख्य रस होता है। कम–से–कम आठ सर्ग होने चाहिए जो न बहुत बड़े हों और न बहुत छोटे। सर्ग के अन्त में आगे की कथा का संकेत होना चाहिए। सन्ध्या, सूर्य, चन्द, अन्धकार, दिन, प्रभात, मृगया, ऋतु, वन, युद्ध आदि जैसे प्राकृतिक विषयों का वर्णन अवश्य होना चाहिए। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष–इन चारों में से किसी एक की प्राप्ति का वर्णन हो। महाकाव्य का मुख्य उद्देश्य धर्म तथा न्याय की विजय तथा अधर्म और अन्याय का विनाश होना चाहिए। महाकाव्य के आरम्भ में नमस्कार, आशीर्वचन या सीधा वस्तु–निर्देश

रहता है । ग्रन्थ का नाम कवि, कथानक, नायक या प्रतिनायक के नाम पर रखा जाता है । सर्ग में एक छन्द का प्रयोग होता है जो कि सर्गान्त में परिवर्तित हो जाता है ।

इन लक्षणों की कसौटी पर महाकाव्यों को परखा जाने लगा और इस प्रकार विकासशील महाकाव्य का परिवर्त्तन 'कलात्मक महाकाव्य' के रूप में हो गया । महाकाव्यकार के रूप में कालिदास, अश्वघोष, भारवि, माघ, श्रीहर्ष का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है ।

कालिदास

कालिदास संस्कृत–साहित्य के श्रेष्ठ कवि जाने जाते हैं । परवर्ती कवियों ने इन्हें कविकुल–गुरु की उपाधि भी दी। कालिदास के काव्यों की ख्याति जितनी निश्चित है उतना ही अनिश्चित उनका जीवन–वृत्तान्त और काल–निरूपण है । कालिदास के नाम से करीब 40 रचनाओं का निर्देश मिलता है लेकिन इनमें सात रचनाएँ ही प्रमाण–सिद्ध हैं । इनमें दो महाकाव्य–*कुमारसम्भव* तथा *रघुवंश;* तीन नाटक–*मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय* तथा *अभिज्ञानशाकुन्तल* तथा दो गीतिकाव्य (खण्डकाव्य)–*ऋतुसंहार* और *मेघदूत* हैं ।

कुमारसम्भव

17 सर्गों में विभक्त कालिदास की यह प्रारम्भिक रचना है किन्तु प्रथम आठ सर्गों को ही कालिदास की रचना माना जाता है । शेष

सर्ग तो कथा की पूर्ति के लिए किसी अन्य कवि द्वारा जोड़े गये थे । शुरू के इन आठ सर्गों में विषय की दृष्टि से एकरूपता है । इन आठ सर्गों में शिव–पार्वती के विवाह तथा दाम्पत्य–जीवन का वर्णन है । यह वर्णन औचित्यपूर्ण और ओजस्वी है। तृतीय सर्ग में शिवजी की समाधि और पंचम सर्ग में पार्वती की कठोर तपस्या का वर्णन तथा शिव–पार्वती संवाद ओजपूर्ण, उदात्त और संश्लिष्ट है तो अष्टम सर्ग का रतिवर्णन तीव्र कटाक्ष का कारण बना । इस महाकाव्य में कालिदास ने अपनी सौन्दर्य–भावना का प्रकर्ष दिखाया है ।

रघुवंश कालिदास की श्रेष्ठ कृतियों में से एक है । इसके 19 सर्गों में 1569 श्लोक हैं । इसमें सूर्यवंशी दिलीप आदि 30 राजाओं का वर्णन हुआ है । दिलीप का गोचारण और रघु का जन्म क्रमशः द्वितीय और तृतीय सर्ग में वर्णित है । रघु अपने अदम्य पराक्रम से भारतवर्ष पर दिग्विजय प्राप्त करते हैं (चतुर्थ सर्ग)। साथ ही अपनी अद्भुत दानशीलता का परिचय भी देते हैं। बाद के सर्गों में इन्दुमती का स्वयंवर, रघुपुत्र अज का इन्दुमती से विवाह, कोमल माला के गिरने से इन्दुमती की मृत्यु और अज का करुण विलाप क्रमशः वर्णित है। 10वें से 15वें सर्ग में रामचरित का वर्णन है । पुनः विभिन्न राजाओं का चरित वर्णन है । 19 वें सर्ग में कवि ने बहुत ही मार्मिकता से कामुक अग्निवर्ण का चित्रण किया है । इस महाकाव्य में भारतवर्ष के प्रख्यात राजवंश की प्रगति और पतन को प्रजा के रञ्जन और

उपेक्षा के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया गया है । राजा रघु ने नाम पर कालिदास ने इस महाकाव्य का नाम **'रघुवंश'** रखा ।

कालिदास के पात्र भारतीयता की भव्यमूर्ति हैं । शब्दों के मिथ्याडम्बर में ये नहीं फँसते । भाव की स्पष्टता, समास का अल्पत्व, मानव–हृदय की परिवर्त्तनशील वृत्तियों की अभिव्यक्ति आदि में ये अत्यन्त निपुण हैं । इनकी प्रशंसा में अगर इन्हें कविताकामिनीविलास या 'कनिष्ठिकाधिष्ठित' कहा गया है तो यह अतिशयोक्ति नहीं है ।

अश्वघोष

बौद्ध महाकवि अश्वघोष महान् धर्मप्रचारक, दार्शनिक और उच्चकोटि के विद्वान थे तथा कुषाण–नरेश कनिष्क के समकालिक थे । ये साकेत (अयोध्या के निवासी) थे । इनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था । अश्वघोष की प्रमाणसिद्ध काव्यकृतियाँ *चार* हैं– **(i)** ***बुद्धचरित*** **(ii)** ***सौन्दरनन्द*** **(iii)** ***शारिपुत्र प्रकरण*** *तथा* **(iv)** ***राष्ट्रपालनाटक*** ।

'बुद्धचरित' अश्वघोष का कीर्तिस्तम्भ है । परन्तु दुर्भाग्यवश 28 सर्गों का यह महाकाव्य मूल रूप (संस्कृत) में अधूरा ही मिलता है । संस्कृत में प्राप्त बुद्धचरित बुद्ध के जन्म से लेकर बुद्धत्व की प्राप्ति तक का ही प्रतिपादन करता है । संक्षेप में कथा इस प्रकार है –बुद्ध का जन्म, अन्तः पुर –विहार, रोगी आदि को देखकर संवेग की उत्पत्ति, स्त्रियों द्वारा सिद्धार्थ को मोहने का प्रयास तथा सिद्धार्थ द्वारा उनकी उपेक्षा, अभिनिष्क्रमण,

सिद्धार्थको छोड़कर सारथि छन्दक का नगर आना, तपोवन–प्रवेश, अन्तःपुर विलाप, बिम्बसार का आगमन, काम की निन्दा, सिद्धार्थ का अराड ऋषि के आश्रम में जाना और धर्मोपदेश ग्रहण करना, कामदेव का बुद्ध की तपस्या में विघ्नोत्पादन, दोनों का युद्ध और कामदेव की पराजय का वर्णन करते हुए बुद्धत्व की प्राप्ति तक का प्रभवोत्पादक विवेचन है । इस प्रकार अश्वघोष ने बुद्ध के संघर्षमय जीवन की विभिन्न घटनाओं का जीता–जागता और रुचिकर चित्र अंकित किया है । तिब्बती और चीनी रूपान्तरों में यह काव्य पूर्णतः उपलब्ध है ।

सौन्दरनन्द 18 सर्गोंका महाकाव्य है । सुन्दरी में आसक्त (सौन्दर) नन्द की कथा इसमें है और महाकाव्य के शीर्षक का आधार भी यही है । सुन्दरनन्द (नन्द) बुद्ध का सौतेला भाई था । नन्द आरम्भ से ही सांसारिक, भोगासक्त और विलासी प्रकृति का था। कामवासना में निमग्न नन्द का उद्धार करने के लिए बुद्ध को जो श्रम करना पड़ा, उसी का वर्णन इस महाकाव्य में है । इसके पूर्वार्ध में नन्द के विलासपूर्ण जीवन का वर्णन करके उसे धर्म की ओर मोड़ने की कथा है। तत्पश्चात् श्रमण द्वारा नन्द को उपदेश, स्त्री–संसर्ग के दोष, अभिमान की निन्दा, नन्द को तपस्या के लिए प्रेरित करना, अप्सरा प्राप्ति के लिए तपस्या करने वाले नन्द का उपहास, नन्द द्वारा बुद्ध से निर्वाण–प्राप्ति का उपाय पूछना और बुद्ध द्वारा विवेक के मूल्यों का वर्णन है । 13 से 18 सर्ग तक बुद्ध के उपदेश वर्णित हैं जिनमें शील और

इन्द्रिय–संयम का महत्त्व, इन्द्रिय–जय के मार्ग, मानसिक शुद्धि की विधि, आर्य सत्य, नन्द को अमृतत्व की प्राप्ति और परम ज्ञान का उपदेश अंकित है । यह दार्शनिक काव्य बौद्ध धर्म के उपदेशों से भरा है ।

अश्वघोष ने सरल, अल्पसमासयुक्त पदावली अपना कर काव्य रचना की है । इन्होंने भी वैदर्भी रीति को अपनाया है । शैली की दृष्टि से सौन्दरनन्द पर रामायण और कालिदास के साथ ही गीता का भी प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है । यह शान्तरस–प्रधान महाकाव्य है। अश्वघोष की काव्यकला की रमणीयता का रहस्य उनकी गम्भीर धर्म–प्रवणता में छिपा है।

भारवि

संस्कृत महाकाव्य के इतिहास में भारवि *'किरातार्जुनीय'* महाकाव्य के लेखक के रूप में विख्यात हैं । इन्होंने महाकाव्य के विचित्र मार्ग का प्रवर्तन किया जिसमें भावपक्ष की अपेक्षा कलापक्ष पर अधिक बल होता है । भारवि दक्षिण भारत के निवासी थे और परम शैव थे ।

'किरातार्जुनीय' भारवि की एकमात्र उपलब्ध कृति है । इस महाकाव्य में 18 सर्ग हैं । इसका कथानक महाभारत के वनपर्व पर आश्रित है। किरात–वेश में आए हुए शिव से युद्ध करने एवं प्रसन्न हुए शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति की मुख्य कथा पर ही इस महाकाव्य का शीर्षक आश्रित है । संक्षेप में इस महाकाव्य का कथानक इस प्रकार है–द्यूतक्रीडा

में पराजित युधिष्ठिर द्वैत–वन में रहते थे । वनेचर द्वारा दुर्योधन की शासन–प्रणाली की जानकारी दी गई। युधिष्ठिर को युद्ध के लिए उत्तेजित किया गया लेकिन उन्होंने इसे नहीं स्वीकार किया । व्यास जी ने अर्जुन को पाशुपतास्त्र–प्राप्ति के लिए तपस्या करने हेतु भेजा । तपस्या भङ्ग करने के लिए दिव्याङ्गनाएँ भी आईं लेकिन अर्जुन नहीं डिगे । शिव ने अर्जुन के तपोबल की परीक्षा किरात के वेश में ली । बाहुयुद्ध के बाद शिव अपने मूल रूप में प्रकट हुए और अर्जुन को पाशुपतास्त्र की प्राप्ति हुई ।

प्रकृति–वर्णन, क्रीडा–वर्णन एवं युद्ध–वर्णन के द्वारा कथानक का विस्तार किया गया है । इस महाकाव्य का आरम्भ 'श्री' शब्द *(श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्)* से होता है और प्रत्येक सर्ग के अन्त में *लक्ष्मी* शब्द आया है जो *'मंगलान्तानि शास्त्राणि प्रथन्ते'* के अनुरूप है । भारवि मुख्यतः कलावादी कवि हैं और अपने अर्थ–गौरव के लिए प्रसिद्ध हैं– *'भारवेरर्थगौरवम्'* (अल्प शब्दों में व्यापक अर्थ का सन्निवेश करना ही अर्थ–गौरव है) । इनके श्लोकों में बहुत से ऐसे अंश हैं जैसे– *हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'* (ऐसी बातें दुर्लभ हैं जो हितकर भी हों और मनोहर भी); *'सहसा विदधीत न क्रियाम्'* (कोई कार्य अचानक नहीं करना चाहिए) । इनकी वाणी को मल्लिनाथ ने *'नारिकेलफलसम्मित'* कहा है । इनकी भाषा बाह्यरूप में तो रूक्ष है लेकिन अन्दर से इतनी सरस

कि अपने भावों के सौन्दर्य से चित्त को प्रसन्न कर देती है ।

भट्टि

भट्टि का एकमात्र महाकाव्य *'भट्टिकाव्य'* है । इसे रावण–वध भी कहते हैं । उन्होंने इस काव्य की रचना राजा श्रीधरसेन के संरक्षण में, उनकी प्रार्थना पर , की थी । इसकी विशेषता सरलता से व्याकरण सिखाने में है । यह महाकाव्य 22 सर्गों में है जिसमें 1624 पद्य हैं । स्वरूप की दृष्टि से यह काव्य चार भागों मे विभक्त है– (1) *प्रकीर्णकाण्ड,* (2) *अधिकारकाण्ड,* (3) *प्रसन्नकाण्ड* और (4) *तिङन्तकाण्ड* ।

प्रकीर्णकाण्ड में पाँच सर्ग हैं जिसमें रामजन्म से लेकर सीताहरण तक का वर्णन है । इस काण्ड में प्रधान रूप से कृत्–प्रत्ययों का निरूपण है । *अधिकारकाण्ड* षष्ठ से नवम सर्ग तक है जिसमें बालि–वध, सुग्रीव का राज्याभिषेक, अशोक–वन–वृत्तान्त तथा हनुमान का निग्रह वर्णित है । इसमें द्विकर्मक धातु, आत्मनेपद आदि का वर्णन है । *प्रसन्नकाण्ड* दशम से त्रयोदश सर्ग तक है । इसमें सीताभिज्ञान का राम द्वारा दर्शन, विभीषण का आगमन और सेतुबन्ध वर्णित है । इसके सर्ग अलंकार, माधुर्य और भावों पर आश्रित हैं । *तिङन्तकाण्ड* में 14 से 22 सर्ग तक हैं । इसमें युद्ध से लेकर राज्याभिषेक तक का वर्णन है । इसके नौ सर्गों में लिट्, लुङ् , लृट्, लङ, लट्,,लिङ् लोट्, लृङ् और लुट् लकारों का प्रयोग हुआ है ।

भट्टि ने इस महाकाव्य में रामायण की सरल और संक्षिप्त कथा के

माध्यम से संस्कृत व्याकरण का ज्ञान देने का प्रयास किया है । कवि का कहना है कि व्याकरण की आँख रखने वालों के लिए यह दीपक के समान है, लेकिन व्याकरण से अनभिज्ञ व्यक्तियों के लिए यह महाकाव्य वैसे ही है जैसे अन्धे के लिए दर्पण ।

दीपतुल्यः प्रबन्धोऽयं शब्दलक्षणचक्षुषाम् ।
हस्तादर्श इवान्धानां भवेद् व्याकरणादृते ।। (22/23)

कुमारदास

'जानकीहरण' महाकाव्य के रचयिता कुमारदास का अनेक प्रमाणों के आधार पर सिंहल (लङ्का) निवासी होना सिद्ध होता है । कुमारदास की एकमात्र रचना 'जानकीहरण' ही मिलती है जिसमें 20 सर्ग हैं । यद्यपि अपने नाम के अनुरूप इसमें सीता के हरण की कथा का होना ही ज्ञात होता है तथापि इसमें राम के जन्म से उनके अभिषेक तक की कथा है । इसमें अलङ्कार और लम्बे वर्णनों की प्रधानता है। रघुवंश से टक्कर लेने वाले महाकाव्य 'जानकीहरण' की प्रशंसा में राजशेखर ने लिखा है –

जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति ।
कविः कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षम : ।।

(सूक्तिमुक्तावली 4/86)

माघ

संस्कृत महाकवियों में माघ का विशेष महत्त्व है । विद्वानों ने इन्हें श्रेष्ठ महाकाव्य का प्रणेता माना है – *'काव्येषु माघः'* । माघ राजस्थान के श्रीमाल या भिन्नमाल नामक नगर के निवासी थे । माघ की सुप्रसिद्ध रचना *'शिशुपालवध'* के अन्त में इनके द्वारा दिए गए वंश–वर्णन के अनुसार इनके पितामह सुप्रभदेव वर्मलात नामक राजा के प्रधानमन्त्री थे । इस आधार पर माघ को 675 ई॰ के लगभग माना जा सकता है ।

'शिशुपालवध' माघ की एकमात्र रचना है जो 20 सर्गों में है । इसका कथानक महाभारत के सभापर्व से लिया गया है । इसके कथानक पर श्रीमद्भागवतपुराण का प्रभाव भी है । इस महाकाव्य के नायक कृष्ण हैं जो यदुपति तथा विष्णु के अवतार हैं । उनमें देवता के गुण तो हैं तथापि वे जगत् के त्राण के लिए मानव रूप धारण किए हुए हैं । शिशुपाल का वध करना उनके लिए कर्त्तव्य के रूप में है । इस काव्य में वीररस की प्रधानता है ।

संस्कृत–साहित्य में माघ ही एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपने समय तक विकसित महाकाव्यों के उत्कृष्ट गुणों का समावेश अपनी रचना में किया है । इसी कारण माघ –विषयक प्रसिद्ध प्रशस्ति है – *'माघे सन्ति त्रयो गुणाः'*

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम् ।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः ।।

अर्थात् कालिदास की विशिष्टता उपमा के कारण, भारवि की अर्थगौरव के कारण, और दण्डी की विशिष्टता पदलाालित्य के कारण है तो माघ की विशिष्टता इन तीन गुणों के समावेश के कारण है ।

श्रीहर्ष (1150–1200ई॰)

श्रीहर्ष का नाम संस्कृत के महान कवियों में लिया जाता है। इनके पिता श्रीहीर और माता मामल्लदेवी थीं । कान्यकुब्ज (कन्नौज) के राजा जयचन्द्र इनके आश्रयदाता थे ।

श्रीहर्ष की दस रचनाओं में अभी केवल दो ग्रन्थ उपलब्ध हैं – ***नैषधीयचरित*** (महाकाव्य) तथा ***खण्डनखण्डखाद्य*** (वेदान्त–ग्रन्थ जिसमें अन्य मतों का खण्डन है) । नैषधीयचरित' श्रीहर्ष का एकमात्र उपलब्ध महाकाव्य है। इसका कथानक महाभारत के वनपर्व से संकलित है । इसमें नल और दमयन्ती के परस्पर प्रणय एवं परिणय की कथा वर्णित है। इसमें नल का सम्पूर्ण आख्यान नहीं है, विवाहोपरान्त नल–दमयन्ती को कलि के कारण जिन संकटों को झेलना पड़ा, उनका वर्णन नहीं हैं । छोटे कथानक को कवि ने अपनी कल्पना–शक्ति और तर्क–प्रवणता के द्वारा 22 सर्गों में फैलाया है । श्रीहर्ष ने अपनी इस रचना में अलंकृत और रसमयी दोनों ही

पद्धतियों का समन्वय किया है। भारवि, माघ और श्रीहर्ष के महाकाव्य बृहत्‌-त्रयी के नाम से प्रसिद्ध है । कल्पना-जन्य वर्णनों की अधिकता इस काव्य को भारवि और माघ के काव्यों से आगे बढ़ा देती है- *"उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः''।*

क्षेमेन्द्र

अनेक विषयों में रचना करने वाले क्षेमेन्द्र (व्यासदास) कश्मीर के रत्न थे । अभिनवगुप्त से इन्होंने साहित्य की शिक्षा पायी थी । कश्मीर के राजा अनन्त एवं उनके पुत्र कलश के राज्यकाल में क्षेमेन्द्र का मुख्य कार्यकाल था । क्षेमेन्द्र का युग (1000-75ई॰) अशान्ति और भ्रष्टाचार से भरा हुआ था, जिसे इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रकट किया ।

क्षेमेन्द्र के ग्रन्थ चार श्रेणियों में विभक्त हैं -

(1) महाकाव्य- *रामायणमञ्जरी, भारतमञ्जरी , बृहत्कथामञ्जरी,* **दशावतारचरित** तथा ***अवदानकल्पलता*** ।

2. उपदेशात्मक काव्य- ***कलाविलास, समयमातृका, चारुचर्या, सेव्यसेवकोपदेश, दर्पदलन, नर्ममाला, देशोपदेश*** तथा ***चतुर्वर्गसंग्रह*** ।

3. काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ– कविकण्ठाभरण, औचित्यविचारचर्चा तथा *सुवृत्ततिलक।*

4. प्रकीर्ण– लोकप्रकाशकोश, नीतिकल्पतरु तथा *व्यासाष्टक* । इस प्रकार इनकी कुल 19 कृतियाँ उपलब्ध हैं । रामायणमञ्जरी तथा भारतमञ्जरी महाकाव्यों में क्रमश वाल्मीकीय रामायण तथा महाभारत की मुख्य कथाओं का संक्षेपण है । इन रचनाओं में प्रसादपूर्ण शैली का आश्रय लिया गया है । बृहत्कथामञ्जरी' अठारह लम्बकों में विभक्त है । यह गुणाद्य–कृत प्राचीन पैशाची–कथाग्रन्थ बृहत्कथा का द्वितीय संस्कृत रुपान्तर है ।

मङ्ख

ये कश्मीर निवासी थे । *'श्रीकण्ठचरित'* नामक महाकाव्य की इन्होंने रचना की जो 25 सर्गों में है । यह महाकाव्य भगवान शङ्कर द्वारा त्रिपुर–नाश के कथानक पर आधारित है ।

रत्नाकर

रत्नाकर कश्मीर–नरेश अवन्तिवर्मा के राज्यकाल में हुए थे । ये कश्मीर–नरेश चिप्पट जयापीड के भी आश्रित थे । रत्नाकर की तीन कृतियाँ उपलब्ध हैं –*हरविजय, वक्रोक्तिपञ्चाशिका* तथा *ध्वनिगाथापञ्जिका* ।

रत्नाकर की ख्याति हरविजय के कारण हुई । यह संस्कृत–भाषा का विशालतम महाकाव्य है जिसमें **50** सर्ग तथा **4321** पद्य हैं । इसमें शिव से अन्धकासुर के जन्म तथा शिव द्वारा ही उसके संहार की कथा वर्णित है ।

अभिनन्द

'रामचरित' के कर्त्ता अभिनन्द हैं । इनके आश्रयदाता हारवर्ष युवराज थे । रामचरित में किष्किन्धाकाण्ड से युद्धकाण्ड तक की रामायण–कथा का संक्षिप्त काव्यमय वर्णन है । ***36*** सर्गों का यह एक अपूर्ण महाकाव्य है ।

संस्कृत भाषा में अनेक कथाओं को, एक साथ अनेकार्थक पद्यों द्वारा निरूपित करने की परम्परा चल पड़ी जिसे ' *द्विसन्धानकाव्य'* कहते हैं। भौमक रचित *'रावणार्जुनीय'*, धनञ्जय रचित *'राघवपाण्डवीय'* द्विसन्धानकाव्य हैं।

ऐतिहासिक महाकाव्य

वस्तुतः भारतवर्ष में इतिहास–दृष्टि का रूप कुछ भिन्न रहा है । भारतीय इतिहासकारों ने क्रमिक तिथिक्रमों और घटनाचक्रों को उतना महत्त्व नहीं दिया जितना व्यक्तिगत जीवन के उत्कर्ष, नैतिक आदर्श तथा राष्ट्र के अभ्युदय से सम्बद्ध क्रिया–कलापों को महत्त्वपूर्ण समझा । जीवन

के शाश्वत सिद्धान्तों को महापुरुषों की जीवनियों में प्रदर्शित करते हुए राष्ट्र का सांस्कृतिक उत्थान करना ही भारतवर्ष में इतिहास का लक्ष्य रहा है । इन्होंने शुष्क तथ्यों को क्रम से सजाने को महत्ता नहीं दी है । इसी दृष्टि से हमारे प्राचीन ग्रन्थ, रामायण, महाभारत, पुराण आदि 'इतिहास' हैं । इतिहास की भारतीय और पाश्चात्य धारणा में अन्तर है । तथाकथित ऐतिहासिक काव्य जो संस्कृत में मिलते हैं वे भारतीय धारणा के इतिहास को ही प्रस्तुत करते हैं ।

इतिहास का आश्रय लेकर काव्य लिखने की परम्परा संस्कृत–भाषा में बहुत पुरानी है । कवियों ने अपने आश्रयदाता की कीर्ति अक्षुण्ण बनाये रखने के उद्देश्य से उनका जीवन–चरित रोचक भाषा में लिखने का प्रयास किया लेकिन यह विशुद्ध साहित्य–कोटि में आता है, इतिहास–कोटि में नहीं । ऐतिहासिक रचनाएँ भारत में पौराणिक पृष्ठभूमि और काव्य–शैली का आश्रय लेकर ही प्रवृत्त हुई हैं । शिलालेखों में जो प्रशस्तियाँ प्राप्त होती हैं वे प्रायः काव्यात्मक ही हैं । आलङ्कारिक काव्य के विकास की दृष्टि से इन प्रशस्तियों का बहुत महत्त्व है साथ ही इतिहास–लेखन में भी इसकी सहायता ली जाती है । इतिहास की दृष्टि से *गिरनार शिलालेख* (150ई॰), *नासिक का प्राकृत–अभिलेख* (149ई॰) *समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भलेख* (350ई॰), *स्कन्दगुप्त का गिरनार शिलालेख* (457ई॰) इत्यादि अत्यधिक महत्त्व रखते हैं ।

ऐतिहासिक काव्यों के प्रथम ग्रन्थ को लेकर कुछ मतभेद मिलते हैं। कुछ विद्वानों ने वाणभट्ट के हर्षचरित को प्रथम ऐतिहासिक काव्य माना जबकि कुछ विद्वानों ने इसका आरम्भ अश्वघोष–रचित बुद्धचरित' नामक महाकाव्य से माना है परन्तु महाकाव्य की दृष्टि से पद्मगुप्त 'परिमल' के 'नवसाहसाङ्कचरित ' को प्रथम ऐतिहासिक महाकाव्य माना गया है।

पद्मगुप्त परिमल कृत नवसाहसाङ्कचरित

पद्मगुप्त का उपनाम 'परिमल' था। वे धारानरेश वाक्पतिराज (द्वितीय) तथा उनके अनुज सिन्धुराज के आश्रित कवि थे। इसके पश्चात् धारा का राज्य (मालव राज्य) सिन्धुराज को मिला था। इसी राजा का नाम 'नवसाहसाङ्क' भी था और कवि ने इन्हीं का चरित इस महाकाव्य में वर्णित किया है। सभी इतिहासकार मानते हैं कि पद्मगुप्त ने 1005 ई॰में अपने महाकाव्य'नवसाहसाङ्कचरित' की रचना की थी। पद्मगुप्त शैवधर्म के अनुयायी थे।

'नवसाहसाङ्कचरित' में *18* सर्ग हैं। इसमें धारा–नरेश सिन्धुराज द्वारा वज्राङ्कु को पराजित करके नागराज शङ्खपाल की कन्या शशिप्रभा से विवाह किये जाने का अत्यन्त सुन्दर वर्णन है। कथानक के कपोल–कल्पित होने पर भी उल्लिखित नाम एवं प्रधान घटनाएँ ऐतिहासिक हैं। इस महाकाव्य का मुख्य रस शृङ्गार है। काम के रूप में पुरुषार्थ की प्राप्ति काव्य का फल है।

बिल्हण का विक्रमाङ्कदेवचरित

कश्मीर–निवासी बिल्हण ने विक्रमाङ्कदेवचरित 'नामक महाकाव्य की रचना 1085 ई॰ में की । इसमें *18* सर्ग हैं । बिल्हण के पिता ज्येष्ठकलश तथा माता नागदेवी थीं । कल्याण के चालुक्य राजा विक्रमादित्य षष्ठ के दरबार में बिल्हण का बहुत सत्कार हुआ और इन्हें 'विद्यापति' की उपाधि प्रदान की गई । इसी राजा के जीवन पर बिल्हण ने 'विक्रमाङ्कदेवचरित' महाकाव्य लिखा । इस काव्य में इतिहास तथा काव्यात्मक वर्णनों का रमणीय समन्वय है । विक्रमादित्य के ऐतिहासिक चरित का वर्णन साहित्य की सरस शैली में किया गया है ।

कल्हण की राजतरङ्गिणी

कल्हण–रचित ***'राजतरङ्गिणी'*** एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य है । ऐतिहासिक काव्यों में अपेक्षाकृत अधिक प्रामाणिक सूचना देने के कारण 'राजतरङ्गिणी' अग्रगण्य है । कल्हण का जन्म 1100 ई॰ के आस–पास हुआ था । इनका मूल नाम कल्याण था । इनके पिता चणपक (चम्पक)कश्मीर–नरेश हर्षदेव (1089–1101ई॰) के अमात्य थे ।

'राजतरङ्गिणी' कल्हण की एकमात्र रचना है । इसमें आठ तरङ्ग हैं । इस महाकाव्य में कल्हण का एकमात्र प्रयास था –कश्मीर के अत्यन्त

प्राचीन काल से लेकर कल्हण के अपने समय तक के इतिहास का प्रामाणिक वर्णन करना । इसमें 2500 वर्षों का इतिहास निरूपित है लेकिन कवि जैसे-जैसे अपने समय की ओर बढ़ते गए हैं, वैसे-वैसे वर्णन में प्रामाणिकता बढ़ती गई है । कश्मीर के राजनीतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक विवरण, आर्थिक स्थिति ,सामाजिक व्यवस्था आदि की जानकारी प्राप्त करने के लिए इस रचना को एक विश्वकोश के रूप में माना जा सकता है ।

राजतरङ्गिणी की कथा का प्रारम्भ 13वीं शताब्दी ई॰ पू0 के किसी गोनन्द नामक राजा के वर्णन से होता है , परन्तु प्रथम तीन तरङ्ग बिना काल-तिथि के उल्लेख के हैं । इस रचना में सर्वप्रथम तिथि उल्लेख 813 ई॰ के आसपास का है जो 1150 ई॰ तक की घटनाओं का प्रामाणिक, पूर्ण और वैज्ञानिक रीति से वर्णन करता है । कश्मीर में धार्मिक सहिष्णुता का चित्रण बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। साथ ही राजाओं के धर्म-विरोधी कृत्यों का भी प्रकाशन किया गया है । राजतरङ्गिणी ग्रन्थ का प्रेम बादशाह अकबर को इतना अधिक था कि इसका अनुवाद उसने फारसी-भाषा में भी करवाया ।

ऐतिहासिक महाकाव्यों की परम्परा में *जल्हण* का *सोमपालविलास* एक प्रमुख ग्रन्थ है । ***हेमचन्द्र*** विरचित ***कुमारपालचरित*** काव्य है । ***सोमेश्वर*** ने ***कीर्तिकौमुदी*** की रचना की । राजा बीसलदेव के सभापण्डित अरिसिंह रचित ***सुकृत-संकीर्तन*** ग्यारह सर्गों में निबद्ध है । ***नयचन्द्रसूरि***

ने *'हम्मीर–महाकाव्य'* चौदह सर्गों में लिखा, जिसकी विषयवस्तु रणथम्भौर नरेश हम्मीर पर आधारित है ।

आधुनिक काल में ***श्रीधर वर्णेकरकृत शिवराज्योदय, शेवडेकृत विवेकानन्दचरित, तिलकयशोऽर्णव*** आदि प्रमुख काव्य हैं । ***डॉ. काशीनाथ मिश्र*** ने ***कर्णाटराजतरङ्गिणी*** आठ तरङ्गों में लिखी जिसमें कर्णाटवंशीय राजाओं का वर्णन है ।

महात्मा गाँधी, नेहरू आदि आधुनिक राजनीतिक पुरुषों पर भी संस्कृत में कई काव्य लिखे गये हैं ।

अभ्यास

1. महाकाव्य किसे कहते हैं ? इसके लक्षणों का विवेचन करें ।
2. महाकविकालिदास के कवित्व पर प्रकाश डालें ।
3. 'कुमारसम्भवम्' की संक्षिप्त कथावस्तु अपने शब्दों में लिखें ।
4. महाकवि 'अश्वघोष' की रचनाओं का संक्षिप्त परिचय दें ।
5. सौन्दरनन्द की कथावस्तु संक्षेप में लिखें ।
6. भारवि विरचित कौन–सा महाकाव्य है ?समीक्षात्मक वर्णन करें ।
7. 'काव्येषु माघः' किनके लिए कहा गया है ?अपने शब्दों में वर्णन करें।
8. 'भट्टिकाव्य' पर समीक्षात्मक निबन्ध लिखें ।
9. श्रीहर्ष विरचित कौन–सी कृतियाँ हैं ? उनका वर्णन करें ।
10. ऐतिहासिक महाकाव्य से आप क्या समझते हैं ? समीक्षात्मक वर्णन करें ।

11. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें –

रत्नाकर, नवसाहसाङ्कचरित, राजतरङ्गिणी, क्षेमेन्द्र, कुमारदास, बुद्धचरित, सौन्दरनन्द, बिल्हण।

वस्तुनिष्ठ–प्रश्न

1. रिक्त स्थानों की पूर्त्ति उचित शब्दों द्वारा करें –

(i) कुमारसम्भवम् में कुल——सर्ग हैं ।

(ii) राजा दिलीप का वर्णन ————महाकाव्य में हुआ है ।

(iii) 'कनिष्ठिकाधिष्ठित' महाकवि————के लिए प्रशंसास्वरूप कहा गया है।

(iv) शारिपुत्रप्रकरण ————की रचना है ।

(v) सौन्दरनन्द में ————सर्ग हैं ।

(vi) भारवि विरचित एकमात्र रचना ——है ।

(vii) 'जानकीहरण' के काव्यकार ——हैं ।

(viii) अन्यमतों के खण्डन से संबद्ध वेदान्त ग्रन्थ——है।

(ix) 'राघवपाण्डवीय' एक ———काव्य है ।

(x) 'राजतरङ्गिणी'————की एकमात्र रचना है ।

2. स्तम्भ 'क' से स्तम्भ 'ख' का सुमेल करें–

	स्तम्भ 'क'		स्तम्भ 'ख'
1.	कालिदास	क.	जानकीहरण
2.	कल्हण	ख.	रघुवंशम्
3.	बिल्हण	ग.	नैषधीयचरित
4.	कुमारदास	घ.	विक्रमाङ्कदेवचरित
5.	श्रीहर्ष	ङ	राजतरङ्गिणी
6.	काशीनाथ मिश्र	च.	हम्मीर
7.	नयचन्दसूरि	छ.	कर्णाटराजतरङ्गिणी